

M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscript Library

No. ^{Rel.}
_{Ser.} 451

Title: Chaudomanjari

451

छंदो मञ्जरी

:	Chhandomanjari	:	Title
:	:	:	Author
:	:	:	Editor
:	:	:	Year, Vols.
:	:	:	Publisher
451	:	:	Remarks

451

श्रीगणेशायनमः॥ ॐ ॥ ॥ छंदोमंजरी ॥ गायत्रीत्रिवदा॥ ओमासम्बर्षणीधत्तः॥ ८॥ ८॥
रापंक्तिः वृत्तनवृत्तं॥ पापापापा॥ पदपंक्तिः अन्नेतसद्य॥ पापापा॥ धाउक्तापति॥
तामेमुम्मानां॥ ६॥ ७॥ ११॥ पादनिचत्त॥ ७॥ ७॥ ७॥ अतिनिचत्त॥ पुरुत्तसंपुरुषां॥ ७॥
६॥ ७॥ यवमध्या॥ ससुन्वेयोवस्तनां॥ ७॥ १०॥ ७॥ वर्धमाना॥ ईशानावार्माणां॥ ६॥ ७॥
८॥ प्रतिष्ठा॥ आपः दधीनसेवर्जं॥ ८॥ ७॥ ६॥ द्रुसीयसी॥ मेसुप्रियाणां॥ ६॥ ६॥ ७॥
विपरीताहसीयसीहंरः सहस्रदानां॥ ७॥ ६॥ ६॥ इतिगायत्रीमेदाः॥ अथोष्णिक॥
योमोदेवः परावतः॥ ८॥ ८॥ १२॥ पुरउ० ष्णिक॥ तत्तचसुर्वेवाहतेमुक्तमुत्तचरत्॥ १२॥ ८॥ ८॥
ककुत्॥ आसत्वायः सबहुंघां॥ ८॥ १२॥ ८॥ ककुम्भं कुशिरा॥ दहीरेकणसन्वेददिवसु-
१२॥ ४॥ नकुशिरा॥ प्रयाघोवे जगन्नाणेनशीमे॥ ११॥ ११॥ ६॥ विधीलिकमध्या॥ द्वा

यस्य सुकुजा विजता वेः ॥ ११ ॥ ६ ॥ ११ ॥ अनुष्टुप् गम्या ॥ पितुं नुस्तो वं ॥ पा. च. च. च. उष्णिक
 न देव ओ इतीनां ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ अधोनुष्टुप् ॥ प्रियतेध व दत्रिवत् ॥ च. च. च. च.
 पदपंक्तिः ॥ तव स्वादिष्टा ॥ पा. पा. पा. पा. पा. ६ ॥ साकसै धात सस्यमित्रीणेनः ॥ १२ ॥ १२ ॥
 च. पिपीलिकस ध्या ॥ पर्यवप्रधन्वनाजसातये ॥ १२ ॥ च. १२ ॥ काविराट् ॥ ताविद्वासाह
 नामहेमां ॥ १ ॥ १२ ॥ १ ॥ नष्टरूपा ॥ निष्टछामिषाक्या ३ नदेवान् ॥ १ ॥ १० ॥ १३ ॥ विराट् ॥ शु
 धीहवंविषिषानस्याद्रेः ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ वाविराट् ॥ अग्नइंद्रश्च दामुवेदुरोणे ॥ ११ ॥ ११
 ११ ॥ बृहती ॥ तंसावधं पितोवकोभिः ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ बृहती ॥ मन्विदन्पदिरास
 ता ॥ च. च. १२ ॥ च. पुरस्ताद् बृहती ॥ अधीन्वयसमतिंच सतच ॥ १२ ॥ च. च. राम
 च. न्यंकुसारिणी ॥ एतंरांसमिंद्रास्मयुष्टुं ॥ च. १२ ॥ च. च. उरो बृहती ॥ त्वमेतत्क १

दुक्मेतत् ॥ च. १२ ॥ च. च. स्कंधो गीवीवा ॥ मस्मपायिते महः ॥ च. १२ ॥ च. च. उव
 रिष्टाद् बृहती ॥ वेपातयंते अजसिः ॥ च. च. च. १२ ॥ विष्टार बृहती ॥ युवस्थासंम
 होरत् ॥ च. १० ॥ १० ॥ च. दुर्ध्व बृहती ॥ अधपदिनेष वमानरोदसी ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ वि
 पीलिकस ध्या ॥ अमिनीवीरसेधसोसदेष्टुमाय ॥ १३ ॥ च. १३ ॥ विषमपदा ॥ सनि
 तः सुसजितरुग् ॥ १ ॥ च. ११ ॥ च. अधपंक्तिः ॥ यो अयो मर्तसोजनो ॥ च. च. च. च.
 विराट् ॥ मन्वेतायतिमं यज्ञियानो ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ सतो बृहती ॥ आयं नरः सु
 दानके ददा मुवे ॥ १२ ॥ च. १२ ॥ च. विपरीता बृहती ॥ यन्मृषः श्वानमस्तरवा ॥ १२ ॥
 च. १२ ॥ प्रसारपंक्तिः ॥ मद्रमिदमद्रातणमस्तरसी ॥ १२ ॥ १२ ॥ च. च. प्रसारपंक्तिः
 मद्रं नो अपिनातय ॥ च. च. १२ ॥ १२ ॥ संसारपंक्तिः ॥ पितुं नुस्तो न तं नुमि सुदानवः ॥ १२

८। ८। १२। विहार वंक्तिः॥ अनेतव प्रबोधयः॥ ८। १२। १२। ८। अथचिह्नम्॥ नमो
 महत्त्वे नमो अर्चके स्मः॥ ११। ११। ११। ११। उपचिह्नम्॥ सोचिन्तु रसियै र्था ३ स्वा
 सचा॥ १२। १२। ११। ११। अमिसारिणी॥ योना चाविना यो म अना चः॥ १०। १०। १२
 १२। विराट्॥ स्वस्तिन इंदो वृद्ध प्रवाः॥ १। १। १०। ११। विराट् स्थाना॥ शुद्धा हवमि
 द्मारा विषयः॥ १०। १। १०। ११। विराट् प्रवाः॥ श्री वं नो रश्म आ मुवः॥ ८। ११। ११। ११।
 ज्योतिष्मती॥ अग्नि नै द्रेण बहणेन विष्णुना॥ १२। १२। १२। ८। मध्ये ज्योतिष्मती॥
 महावतं मनवे संमिसि सधुः॥ १२। ८। १२। १२। महावृहती॥ नवानं नव तानो॥
 ८। ८। ८। ८। १२। यवमध्या॥ ३ वृहत् सिरने अर्चिभिः॥ ८। ८। १२। ८। ८। पंक्तु
 तरा॥ समिंदेर यगा मन द्वा हं॥ १०। १०। ८। ८। ८। विराट् पूर्व्यामा॥ रावे द्वा विष्णु

राम
 २

महाविहमे॥ १०। १०। ८। ८। ८। अथजगती॥ अमिसं मे वं पुरु हू त म र्मियं॥
 १२। १२। १२। १२। महासतो वृहती॥ विष्णो सौ ग हवति विरामसि॥ १२। ८। १२। ८
 ८। महावंक्तिः॥ सूर्ये विषमा सजासि॥ ८। ८। ७। ६। १०। १। महावंक्तिः॥ यदिहा
 ग्नी जना इ मे॥ ८। ८। ८। ८। ८। अथातिजगती॥ तमिंदं जो हनी मिमधना
 नमुने॥ १३। १३। १३। १३। अतिजगती॥ मनोमहे सतयो वंतु विष्णवे॥ १२। १२। १२।
 ८। ८। शक्रा॥ प्रोष्य सै पुरोरथं॥ ८। ८। ८। ८। ८। ८। राक्षसी॥ अथ
 तं कलशं गोपि रत्नं॥ ११। ११। ११। ११। ११। अतिशक्रा॥ साकं जातः क्रतुना सा
 कसो जसा ववक्षिथा॥ १६। १६। १२। ८। ८। अतिशक्रा॥ सुषुमाया तमिदि
 तिर्गो श्री ताम सरा इ मे॥ १६। ८। १६। १२। ८। अष्टौ॥ चिक डुके पुमहिषो

यकारिवंतुनिशिष्णः॥ १६।१६।१६।च।च। असदी॥ यकारुचाहरिष्यापुनानः॥
१२।१२।च।च।च।१३।च।धृतिः॥ अवर्मदइंदंदांरदिमुधीनः॥ १२।१२।च।च
च।१६।च।अतिधृतीः॥ सहिश्रधोनमारुतंतुविष्वणिः॥ १२।१२।च।च।च।
१२।च।च।लतिः॥ अशीसक्षराणि॥ च०।मलतिः॥ च४।आलतिः॥ च८।
विलतिः॥ ९२।संस्रतिः॥ ९६।अभिलतिः॥ १००।उल्लतिः॥ १०४॥ ॥ इ
तिछंदोमंत्रासमाप्ता॥ ॥ श्रीगणपतिःप्रियतो॥ ॥ श्रीराम॥ ॥ राम

3